राज्य की उत्पत्ति के समझौतावादी सिद्धान्त-

राज्य की उत्पत्ति के समझौतावादी सिद्धान्त के विचारकों में हाब्स, लॉक तथा रूसो जैसे राजनीतिक विचारक आते हैं। उन्होंने अपने ग्रंथों में राज्य की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन करते हैं जिसके परिणाम स्वरूप राज्य की उत्पत्ति होती है।

1- हाब्स अपने ग्रंथ -'लेवियाथन' में प्राकृतिक अवस्था का वर्णन करते हुए कहता है कि इस अवस्था में मनुष्य मूलतः स्वार्थी, क्रूर एवं अहंकारी है। उसे सत्‌ · असत्‌, अच्छे-बुरे का कुछ ज्ञान नहीं है। वह प्रत्येक कार्य अपने स्वहित के अनुसार करता है। अर्थात्‌ यह अवस्था घृणित, पाशविक, एवं क्षणभंगुर है।

Two Treatises on civil Government
टू ट्रीटाइजज on सिविल गवर्नमेंट

2- लॉक प्राकृतिक अवस्था का वर्णन हाब्स के पूर्णतः विपरीत करता है। उसके अनुसार इस अवस्था में मनुष्य सत्यवादी, सदाचारी, परोपकारी एवं सामाजिक है। प्रत्येक मनुष्य का दूसरे मनुष्य से आत्मिक संबंध होता है। उसे इस अवस्था में तीन प्राकृतिक अधिकार प्राप्त होते हैं जीवन स्वतंत्रता तथा संपत्ति का।

3- रूसो अपनी पुस्तक 'सोसल कांट्रैक्ट' में प्राकृतिक अवस्था का वर्णन करता है कि इस अवस्था में मनुष्य सभ्य जंगली था। उसका न किसी से बैर था न मित्रता थी। सभी अपने अपने कार्यों से प्रसन्नचित थे।

राज्य की उत्पत्ति के कारण -

1- हाब्स कहता है कि व्यक्ति प्राकृतिक अवस्था में अपने आपको असुरक्षित समझता है अतः वह अपनी जीवन की सुरक्षा हेतु एक समझौता करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से यह कहते हैं कि " मैं इस व्यकित या व्यक्ति समूह को इस शर्त के आधार पर अपना अधिकार सौंपता हूं कि तुम भी अपना सम्पूर्ण अधिकार मुझे सौंप दोगे। इस तरह राज्य की उत्पत्ति हो जाती है।

2- लॉक कहता है कि प्राकृतिक अवस्था पूर्णतः सद्भावना

सुक्त थी लेकिन धीरे-धीरे जनता के बीच झगड़े होने लगे तथा प्राकृतिक अधिकार असुरक्षित हो गया। फलस्वरूप व्यक्ति यह समझौता करते हैं " हमारे बीच उत्पन्न विवादों का निबटारा हम स्वयं नहीं करेंगे बल्कि यह कार्य न्यायिक अधिकारी या मजिस्ट्रेट करेगा। तथा सरकार उनकी सुरक्षा करेगी।

3- रूसो कहता है कि प्राकृतिक अवस्था अधिक दिन तक स्थिर नहीं रही। जनसंख्या की अधिकता एवं तर्क के उदय के कारण जनता में घोर अशांति व्याप्त हो गयी। मनुष्य तेरी-मेरी की भावना उत्पन्न हो गई जिससे निजी संपत्ति की उत्पत्ति हो गई। वह व्यक्ति जिसने भूमि के एक टुकड़े का घेरा बना कर कहा कि यह भूमि मेरी है राज्य का वास्तविक संस्थापक था।

इस प्रकार हाब्स लॉक एवं रूसो के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में उपजी विकृतियों के कारण राज्य की उत्पत्ति होती है।

आलोचना-

1- ऐतिहासिक दृष्टि से यह सिद्धान्त कोरी कल्पना है। इतिहास के सम्पूर्ण क्रम में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे प्रकट हो कि राज्य की रचना विचारपूर्ण ढंग से स्वेच्छापूर्ण समझौते से हुई हो। यह अनुमान करना व्यर्थ है कि लोगों ने सभ्यता के प्रारंभिक चरणों में सरकार की कला का तनिक भी अनुभव न होने की दशा में, राजनीतिक संगठन के निर्माण के बारे में सोचा हो।

2- सामाजिक अनुबंध के सिद्धान्त की कहानी वास्तव में सत्य और वास्तविकता से बहुत दूर है। पूर्ण प्राकृतिक अवस्था जैसी कोई अवस्था कभी भी नहीं थी। यहां तक कि स्वयं हाब्स ने भी स्वीकार किया था कि वास्तव में प्राकृतिक दशा कभी भी नहीं हुई थी।

3- समझौतावादियों का मत है कि व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत रक्षा और सम्पत्ति की सुरक्षा के लिए अनुबंध करते हैं, किन्तु इतिहास हमें उल्टी बात बतलाता है। प्रारम्भिक प्राचीन नियम व्यक्तिगत की अपेक्षा सामाजिक अधिक था। और समाज की इकाई व्यक्ति नहीं अपितु परिवार था।

4- यदि यह मान भी लिया जाये कि राज्य समझौते का परिणाम है तो सामान्य बुद्धि हमें बतलाती है कि समझौते में सदैव दो दल होते हैं। हाब्स की धारणा के अनुसार समझौता एकपक्षीय नहीं हो सकता।

Scanned by TapScanner

5- समझौतावादियों के अनुसार यह कल्पना की जाती है कि आदमी प्राकृतिक दशा में समान थे किन्तु यह कल्पना गलत है। प्रारंभिक समाज में समानता के बजाय असमानता अधिक थी।

6- प्राकृतिक अधिकारों और प्राकृतिक स्वतंत्रता का विचार तर्क हीन है। प्राकृतिक अवस्था में स्वतंत्रता का अस्तित्व नहीं हो सकता।

7- सामाजिक समझौता सिद्धान्त को इस लिए नहीं स्वीकार किया जा सकता क्योंकि व्यक्ति और राज्य के बीच का संबंध स्वेच्छा का संबंध नहीं है। इन में से प्रत्येक को अनिवार्यतः राज्य का सदस्य होना चाहिए और वे बंधन जो मनुष्य को परस्पर बांधते हैं, स्थायी हैं।

8- अंततः अनुबंध सिद्धान्त के स्थापिताओं का विचार राज्य के मूल को खोजने का नहीं था। उनका मुख्य उद्देश्य राज्य के आधार की कल्पना करना था।

राज्य की उत्पत्ति का दैवी सिद्धान्त-

राजाओं के दैवी अधिकार के सिद्धान्त की मुख्य बातें-

1- राजतंत्र दैवी विधान है और राजा अपनी सत्ता ईश्वर से प्राप्त करते हैं।
2- राजतंत्र पैतृक है और यह राजा का ईश्वरीय अधिकार है कि यह पिता से पुत्र को प्राप्त हो।
3- राजा केवल ईश्वर के प्रति उत्तरदायी है।
4- राजा की विधि विहित शक्ति का विरोध पाप है।

आलोचना-

1- राज्य की उत्पत्ति का दैवी सिद्धान्त का वर्तमान राजनीतिक विचार धारा में कोई स्थान नहीं है। राज्य अनिवार्यतः मानवी संस्था है और इसका अस्तित्व तब होता है जब कुछ लोगों की एक संख्या जिन्होंने एक निश्चित प्रदेश पर अधिकार किया हो, राजनीतिक रूप में सर्वमान्य सदस्यों के लिए पारस्परिक संगठित होती है।

2- राज्य के नियम मनुष्य बनाते हैं और वे उन्हीं के द्वारा जारी होते हैं। फलतः राज्य की उत्पत्ति मनुष्य जीवन की निम्नतम

Scanned by TapScanner

आवश्यकताओं के कारण हुई और उन आवश्यकताओं की पुर्ति करने के लिए ही राज्य का अस्तित्व बना रहता है

3- राज्य को भगवान की रचना स्वीकार कर लेना उसको आलोचना और परिवर्तन की स्थिति से ऊपर उठा देना है। इस प्रकार दैवी सिद्धान्त भयंकर है क्योंकि यह शाही अधिकार को एक पवित्र कार्य को इस आधार पर न्यायिक ठहराता है।

4- जब शासक को उसके कार्यों के लिए परमात्मा के प्रति उत्तरदायी बनाया जाता हो और यह माना जाता हो कि नियम अंतत: 'राजा के हृदय' में निवास करता है, तो यह निरंकुशवाद के प्रचार के समान है और यह राजा को नियंत्रणहीन और स्वेच्छाचारी बनाता है।

5- यदि यह मान भी लिया जाये कि राजा-परमात्मा का सहायक प्रतिनिधि है, तो बुरे राजा के अस्तित्व को क्यों उचित माना जा सकता है। बुरे और दुष्ट राजाओं के उदाहरणों से इतिहास भरा पड़ा है। परमात्मा सत्यं, शिवं, सुन्दरं की अभिव्यक्ति है, और इसी तरह उसका प्रतिनिधि होना चाहिए।

निष्कर्षत: यह सिद्धान्त निरंकुश राजतंत्र के सिवा सरकार के अन्य किसी भी रूप को स्वीकार नहीं करता है। इस लिए दैवी अधिकारों से संपन्न राजा ऐसे लोकतंत्रीय आदर्शों के विरुद्ध मान्यता है जो राज्य का आधार सर्वसाधारण की स्वीकृति को स्वीकार करते हैं।

राज्य की उत्पत्ति के विकासवादी तत्व-

1- रक्त संबंध
2- धर्म
3- सम्पत्ति और स्था
4- शक्ति
5- राजनीतिक चेतना

Scanned by TapScanner

राज्य की उत्पत्ति के मार्क्सवादी दृष्टिकोण

राज्य की उत्पत्ति एवं प्रकृति संबंधी मार्क्सवादी सिद्धान्त राज्य को एक विशेष वर्ग या साधन मानता है जो समाज के एक विशेष वर्ग के लिए अस्तित्व में आता है। कार्लमार्क्स की अपेक्षा फ्रेडरिक एंजेल्स ने इसकी व्यापक व्याख्या अपनी पुस्तक 'एंटीड्रहारिंग' एवं 'ओरिजन ऑव फैमिली, प्राइवेट प्रोपर्टी एण्ड दि स्टेट 1884' में किया है।

राज्य की उत्पत्ति के संबंध में एंजेल्स का दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से ऐतिकवादी है। एंजेल्स अपने सिद्धान्त का प्रारंभ कबीला प्रधान समाज से करता है। उस समाज में कुछ व्यक्तियों के पास आदेश देने तथा नियमों की व्याख्या करने का अधिकार था, परन्तु समाज शासित एवं शासक वर्ग में बंटा हुआ नहीं था।

राज्य की आवश्यकता तब उत्पन्न हुई जब श्रम विभाजन के कारण समाज भिन्न-2 वर्गों में बंट गया। पशुपालन, कृषि, व्यापार, शिल्प, उद्योग आदि की उन्नति से समाज में इतना धन उत्पन्न होने लगता है कि एक वर्ग बहुसंख्यक श्रम करने वाले वर्ग के उत्पादन का एक हिस्सा लेकर स्वयं बिना श्रम किए जीवन व्यतीत करने लगजाता है। ऐसे समाज में योद्धा, पुरोहित, और प्रशासक स्वामी वर्ग से आते हैं जो दासों तथा अन्य अधीन वर्गों के श्रम का शोषण करते हैं। स्वामी वर्ग दासों, स्त्रियों, खेतों, पशुओं, खदानों, आदि को समान रूप से अपनी सम्पत्ति मानता है। शोषण की यह प्रक्रिया ही राज्य को जन्म देती है। दिओल के अनुसार, "बढ़ते हुए श्रम विभाजन ने परस्पर विरोधी हितों वाले ऐसे वर्गों को जन्म दिया जिनमें संघर्षों का निबटारा केवल राज्य कर सकता था।"

एंजेल्स के अनुसार:- "राज्य समाज पर लादी हुई कोई बाहरी शक्ति नहीं है न यह नैतिक विचार की वास्तविकता है और न यह बुद्धि का प्रतिबिम्ब और सत्य है, जैसा कि यह तो समाज के विकास के एक निश्चित चरण की उपज है।" लेनिन के अनुसार:- "राज्य वर्ग संघर्षों की जिनमें कोई समझौता संभव नहीं, उपज और अभिव्यक्ति है।

Scanned by TapScanner